शोध मंथन Vol. XVII No.2 Apr.- June. 2026 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *https://anubooks.com/journal-volume/shodhmanthan-vol-xvii-june-2026-no2*

पूर्ववर्ती समकालीन महिला कलाकारों के संदर्भ में

प्राप्तिः 20.05.2026
स्वीकृतः 08.06.2026

52

डॉ मनोज कुमार
कला आध्यापक
राजकीय उच्च माध्यमिक, बाल विद्यालय,
22–बी, देव नगर, नई दिल्ली

सारांश

भारतीय समकालीन कला में महिला कलाकारों ने सामाजिक यथार्थ, स्त्री–अस्मिता तथा लैंगिक असमानताओं को अपनी कला के माध्यम से प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत किया है। उनकी कृतियों में समाज की विसंगतियाँ, कुरीतियाँ, स्त्री–दमन, शोषण तथा मानसिक संघर्षों का सषक्त चित्रण दिखाई देता है। प्रस्तुत अध्ययन में यह स्पश्ट किया गया है कि महिला कलाकारों की कला केवल सौंदर्य प्रदर्शन तक सीमित नहीं रही, बल्कि वह सामाजिक चेतना और स्त्री–अभिव्यक्ति का माध्यम बनी। महिला कलाकारों ने पुरुष–प्रधान समाज में स्त्रियों की स्थिति, उनके अनुभवों तथा आंतरिक संवेदनाओं को चित्रों के माध्यम से अभिव्यक्त किया। पुरुष और महिला कलाकारों की दृष्टि में अंतर भी इस अध्ययन का महत्वपूर्ण पक्ष है। जहाँ पुरुष कलाकार स्त्री को बाह्य सौंदर्य के रूप में चित्रित करते हैं, वहीं महिला कलाकार स्त्री के मानसिक, सामाजिक और भावनात्मक पक्षों को प्रमुखता देती हैं।

यह अध्ययन दर्शाता है कि महिला कलाकारों ने भारतीय और पाश्चात्य कला–परंपराओं के समन्वय से आधुनिक कला में नवीन प्रयोग किए तथा स्त्री–अस्तित्व को सशक्त अभिव्यक्ति प्रदान की। उनकी कला सामाजिक परिवर्तन, स्त्री–स्वतंत्रता और मानवीय संवेदनाओं की वाहक के रूप में उभरती है। इस प्रकार समकालीन भारतीय महिला कलाकारों की कृतियाँ सामाजिक चेतना और स्त्री विमर्श की महत्वपूर्ण धारा को स्थापित करती हैं।

मूल शब्द

समकालीन कला, महिला कलाकार, स्त्री–अस्मिता, सामाजिक चेतना, लैंगिक असमानता, अभिव्यक्ति, स्त्री–विमर्श

महिला कलाकारों की कृतियों में समाज की विषमताओं, संज्ञान, विडम्बनाओं, कुरीतियों के साथ–साथ महिला विरोधी व दमन और त्रासदी का अभिव्यक्त करण अधिक हुआ है। समाज की विसंगतियों की आधुनिक दृष्टि से परखने के मानसिकता के आधार पर पाश्चात्य विचारधारा और भारतीय चिंतन को अपनी अभिव्यक्ति के लिए महत्त्व दिया है।

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i02.052

अनेक प्रसिद्ध महिला कलाकारों के समय के परिवेश का अध्ययन करने पर यह आभास होता है कि समकालीन के चिंतन को अपनी अभिव्यक्ति को मुखर करने में भारतीय समाज की रूढ़िवादी परम्पराओं का अवरोध हुआ लेकिन समकालीनता की ओर अग्रसर महिला कलाकारों ने अपने समकालीन चित्रकारों के साथ प्रगतिशील विचारों को अपनाया है। भारतीय सामाजिक वातावरण में पूर्ववर्ती समकालीन के प्रगति की गति मन्द रही है, जिससे आधुनिक और अर्वाचनिय विचारों के मध्य सघर्ष चलता रहा है।

पुरुष व महिलाओं की भावनात्मक अभिव्यक्ति का आधार एक होते हुए भी आयाम भिन्न होते हैं। यह सत्य है कि महिलाएं आधी दुनिया है लेकिन अभिव्यंजना के क्षेत्र में उनको वह स्वतन्त्रता या आजादी हासिल नहीं हुई है जो पुरुषों को प्राप्त है शायद इसका कारण पुरुष प्रधान समाज का होना है। महिलाओं को एक विशिष्ट क्षेत्र तक ही सीमित कर दिया गया जिससे उनकी रचनात्मक प्रतिभा कुंठित ही नहीं बल्कि उनके अन्दर दमित मनोवेष भी पर्त दर पर्त जमते गये और इन मनोवेगों का क्रमिक विस्फोट समकालीन कला में अभिव्यक्त हो रही है।

स्वतन्त्रता पूर्व से स्वतत्रंता पाश्चात्य के कला वातारण में महिला कलाकारों की भूमिका महत्त्वपूर्ण रही है। समकालीन के पूर्व कला के आरम्भ में महिला चित्रकार अमृता शेरगिल ने भारतीय कला में महिला चित्रकारों के चुनौतियों और सघर्ष के लिए एक ऐसा आधार बनाया जिससे प्रेरित होकर अनेक महिला कलाकारों ने अपने समसामयिक परिवेश में भारतीय कला में नवीन सम्भावनाओं का सूत्रपात किया है।

महिलाओं की स्वतत्रंता की छटपटाहट के कारण समाज में महिलाओं की आजादी का सूत्रपात हुआ और इसमें महिला चित्रकारों की भूमिका भी महत्त्वपूर्ण रही है। महिला चित्रकारों में समाज की विषमताओं की अभिव्यक्ति करण अधिक हुआ है। चित्रकार अमृता शेरगिल की कृतियों में नारी प्रधानता है। जहाँ एक ओर अपने आदर्श और परम्पराओं में बधी नारी का परिवेश है। वहीं आधुनिकता की ओर अग्रसर उनका स्वनिर्मित व्यक्ति चित्र है। महिला कलाकारों ने नारी के भावों की स्वतत्रंता प्रदान किया है। पूर्ववर्ती समकालीन महिला कलाकारों में अमृता शेरगिल, जया अप्पासामी, गोगी सरोजपाल, देवयानी कृष्ण, वी0 प्रभा, जरिना हाशमी, अर्पिता सिंह, अंजली इलामेनन, माधवी पारेख, सुरूचि चंद, निलिमा शेख, नलिनी मलानी आदि कलाकारों ने अपने कला–कर्म में व्यक्तिगत जीवन के विभिन्न पहलुओं को सामाजिक अभिव्यक्ति प्रदान किया है। उन्होंने अपने चित्रों में बाह्य जगत व आन्तरिक मूल्यों की अभिव्यक्ति को प्रश्रय दिया। कला जगत में उनके चित्रों के विषय किन सामाजिक परिवेश के साथ सम्बन्ध रखते है। इन्हीं बातों को आधार बनाकर महिला कलाकार अमृता शेरगिल, वी0 प्रभा, देवयानी कृष्ण, गोगी सरोजपाल आदि कलाकारों के कृतियों की परख की जा सकती है। महिला व पुरुष कलाकारों के विषय एक होते हुए भी उनके देखने व समझने के साथ–साथ अभिव्यक्त करने का नजरिया अलग–अलग रहा है। पुरुष कलाकार पहले पुरुष है उसके बाद वो कलाकार है इसलिए उसकी जैविक व मनोवैज्ञानिक जिज्ञासा व मनोकंठाएं संवगोत्मक प्रवाहों के आधार में होती है। पुरुष को अपने पौरुश पर दम्ब होता है। इसलिए उनकी दृष्टि महिला चित्रकार या किसी भी महिला की दृष्टि से अलग होती है। पुरुष की यही दृष्टि पुरुष कलाकारों की रचनात्मक काल में सक्रिय हो जाती है और वे नारी देह को एक ऐसी जैविक उत्कंठा से देखते हैं जिसमें काम संबंधी, दमित वासनाओं या कुंठाओं का समावेश होता है।

पुरुष द्वारा रचित नारी देह नग्न अथवा आवृत में नारी के सौंदर्य का वही प्रश्न मुखर होता है या उद्घाटित होता है जो पुरुष के मानस में संस्कार जनित होते हैं। इसलिए पुरुष कलाकार कभी भी स्त्री देह के अंकन में समावेशी और सम्पूर्ण भावनाओं की अभिव्यक्ति नहीं कर सकता है जबकि नारी या स्त्री अपनी देह को प्रकृति के रूप में देखती है वह जननी है और प्रजनन के सभी जैविक और मनोवैज्ञानिक पक्षों का निर्वहन करते हुए भी उसका अपनी ही देह को आवृत या अनावृत दिखाने का लक्ष्य अलग होता है।

जब स्त्री कलाकार अपनी स्वयं की या किसी भी स्त्री के शरीर की या शारीरिक सौंदर्य को चित्रित करती है तो उसमें कामुकता या वासना जैसा तत्व नहीं होता है बल्कि वह स्त्री अस्तित्व की सम्पूर्णता को लेकर आगे बढ़ती है जिसमें प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष तत्वों व मनोभावनाओं को प्रमुखता से स्थान दिया जाता है। नारी कलाकार की वैश्विक दृष्टि और समझ तथा सोच पुरुषों से अलग है क्योंकि वह शारीरिक रूप से शक्तिशाली तो अधिक है लेकिन उसमें भौतिक बल कम होता है। पुरुषों के विपरीत उसमें सहनशक्ति और भविश्य की प्रत्याशा अधिक बलवती होती है इसके साथ–साथ महिला चित्रकार पुरुष चित्रकार के अपेक्षा उनकी कल्पना और उनके बिम्ब तथा रंग पुरुषों से भिन्न होते हैं जिसके पीछे स्त्रियों की संवेदनशीलता और समायोजन की क्षमता का विस्तार है जो उन्हें रचना के नये आयाम, बिम्ब और स्वरूप प्रदान करता है।

उपरोक्त तथ्य से स्पष्ट हो जाता है कि रचनाधर्मिता व अभिव्यंजना के धरातल पर पुरुष व स्त्री कलाकारों के अभिव्यंजना के आयाम व विषयवस्तु अलग हो जाते हैं जिसके पीछे मूल रूप से स्त्री व पुरुष का मनोविज्ञान है और जो काफी वर्षों तक एक–दूसरे से भिन्न है। ये बात दूसरी है कि महिला चित्रकारों की अभिव्यंजना अधिक उद्दम और तरल है क्योंकि उन्हें लैंगिक भेद होने के कारण प्रत्येक समाज में दबाया गया है।

अमृता शेरगिल के चित्रों के बारे में लिखा है कि पूर्व व पाश्चात्य दोनों के गुणों का अधिकांश प्रभाव था। जिसके कारण अमृता अपने कलात्मक गुणों का संश्लेषण करना चाहती थी।''[1] महिला कलाकार वी0 प्रभा ने अमृता शेरगिल की भाषा को अन्य रूपो और शैली के प्रयोगों द्वारा नई छवि देने की कोशिश की। यहाँ आधुनिक पाश्चात्य चित्रकारों की कला कृतियों उनके लिए सन्दर्भ बनी। अमष्ता शेरगिल फ्रेंच कलाकार पाल गोगाँ से प्रभावित है। उनके विचार बहुत हद तक यह दर्शाते है कि उनके पास भी अपने देश का एक आदर्श ढ़ाचा बना हुआ था, जिसे उन्होंने उत्तर प्रभाववादी कला–भाशा के साथ पारम्परिक भारतीय कला–विधा के तत्त्वों के सम्मिश्रण से विकसित रूप विधान में अभिव्यक्त किया, लेकिन सही यह है कि उनके चित्रों में पनपती स्त्री–आकृतियों में प्रचलित मान्यताओं को तोड़ने की कोशिश की है।

स्त्री संघर्ष गाँव और धार्मिक मान्यताओं की पवित्रता को प्रश्नाकिंत किया था। परन्तु उनकी रूचि रूप–विधान के नवीन प्रयोगों में ज्यादा थी। इसी रूचि के बाद की महिला कलाकरों के कला के राय को भी निर्धारित किया है। बाद में वी0 प्रभा और उसके बाद पीलू पोचखानवाला, जया अप्पासामी, नसरीन मोहम्मदी, अनुपम सूद, अर्पिता सिंह, अंजली इलामेनन ने अपनी कला को रूपात्मक प्रयोगों और अमूर्त विचारों से ही निर्धारित किया है। भारतीय कला में सभी कलाकारों का मानना था कि एक अच्छा कलाकार हमेशा विश्वव्यापी होता है।

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i02.052

सुनीता शर्मा अपने शोध में बताती है कि ''मीनाक्षी काजी ने हमेशा एक ही रंगों का अमूर्तन मे ं प्रयोग किया है, तथा जिसके साथ ही वह बैकग्राउण्ड के प्रभाव के गुण को पूर्ण संलग्नता के साथ प्रस्तुत करने का प्रयास करती है। उनके कोलाज चित्रों में काले व सफेद रंग ही दिखायी देता है।''[2] नसरीन मोहम्मदी एक ऐसी कलाकार थी, जो महिला व पुरूष के आन्तरिक सम्बन्धों को समझने के लिए रूप और बौद्धिकता के बीच बौद्धिकता को वह उच्च स्तर पर स्थापित करती है। अपनी पुस्तक 'वृहद आधुनिक कला कोश' में विनोद भारद्वाज कहते है कि ''नसरीन मोहम्मदी अपने चित्रों में स्याह रंगों द्वारा बोल्ड रेखाओं को दिखाने की कोशिश की है तथा उनकी एक अलग पहचान है। ज्यामितिक रूपाकारों का एक संतुलन संसार उनकी कलात्मकता की दुनियाँ में प्रमुख पहचान बनी है तथा इनको फोटोग्राफी करना भी पसन्द है।''[3] सौन्दर्यानुभूति को तात्रिंक प्रतीकार्यो के साथ चित्रित किया है।'' नसरीन मोहम्मदी ने अपने कला जीवन का आरम्भ युद्ध अवर्णानत्मक आकारों के अभिव्यक्तिकरण द्वारा किया है।[4]

उनकी प्रवृत्ति स्वच्छन्द रही है, यह स्वच्छन्दवादिता उनके अमूर्त चित्र संयोजन में भी दिखायी दी है। वे खासतौर पर चित्रमय समस्या से सम्बद्ध रही है। यह कहा जा सकता है कि स्वच्छन्द मानसिकता का प्रचलन आधुनिक महिला कलाकारों में भी दिखायी दिया, जैसे नसरीन मोहम्मदी के चित्रों में सभी यर्थाथ से अलग एक नवीन प्रवृत्ति का बोध रहा है। जया अप्पासामी लेखन के साथ–साथ चित्र की दुनिया में भी काम की है वह कला की दुनिया में उतना ही आगे रही है जितना लेखन की दुनियाँ में। उन्होंने बड़े–बड़े चित्र तैल माध्यम से प्रायः गाढ़े हरे तथा नीले रंगों में खूबसूरती से अंकित किया है, कली के समान कोमल किशोरिया जिसका यौवन खिल रहा है उनके चित्रों की विषय बनी। जया अप्पासामी के चित्रों के पृष्ठभूमि में प्रायः पेड़, पहाड़ व विरोधाभास का प्रतीक मुगल आकृतियाँ अंकित है। इन्होंने अपने अंतिम समय में बालिकाओं का प्रतीक छोड़ दिया और दृश्य चित्र बनायें, किन्तु उसमें भी उसी प्रकार के रंगों से पूर्व यौवन में प्रकृति का अद्भूत सौन्दर्य अंकित हुआ है।

सुनीता शर्मा कहती है कि ''किशोरी कौल अपने कैनवासों पर अपनी भावव्यक्ति को एक नये रूपों में प्रदर्शित की है। जिसकों उन्होंने अपने चित्रों में स्पष्ट अमूर्तभाव के आकारों के अभिव्यक्तिकरण और स्वरूप बदलाव द्वारा नये–नये रूपों के गठन को चित्रों में नया स्वरूप सौन्दर्यबोध प्रदान किया है।''[5] एक ओर जहाँ स्वाभाविक, प्राकृतिक आकारों, आकृतियों और उनके स्वरूप के गठन को नवीन सन्दर्भ में प्रयोगात्मक दृष्टि से देखा, वहीं चित्रों में अमूर्त भावों को उजागर करने के प्रयास से चित्रों में आधुनिक सन्दर्भों को महत्त्व मिला है। किशोरी काल बहुत ही कम रंगों का पैलेट पर नाइफ से प्रयोग करती है, जिसे मोनोक्रोमेटिक रंगों का प्रयोग कहा जाता है।

समकालीन पूर्व महिला कलाकारों द्वारा चित्रों में नवीन प्रयोगात्मक क्षमता तो दिखा ही, साथ ही चित्रों के माध्यम के साथ संवेदनात्मक क्षमता और अपने कार्य के प्रति लगन भी दिखायी दिया है, जो आधुनिक परिवेश के साथ चलने की प्रवृत्ति मानी जा सकती है। पूर्ववर्त्ती महिला कलाकारों ने अपने मानसिक भावनाओ को चित्रों के साथ अभिव्यक्ति प्रदान किया है। उनके चित्रों को ध्यान से देखे तो ऐसा आभास होता है कि अपने अन्दर की भावनाओं को ही अभिव्यक्ति का आधार बनाया है। आधुनिक विचारधाराओं के प्रवाह के साथ नहीं जाकर धाराओं के विपरीत अपने अभिव्यक्ति का संवल बनाया है। ऐसी बात भी नहीं है कि अपने संसारगत परिवेश को एकदम नाकार दिया,

बल्कि आधुनिक सम्भावनाओं के साथ में पनपे, आधुनिक विचारों में संतुलन रखकर अपने कलाकर्म में मानसिक स्वतत्रंता को महत्त्व दिया है।

पूर्ववर्ती समकालीन महिला कलाकार वी0 प्रभा बचपन से ही चित्र बनाया करती है। उन्होंने नारी आकृतियों को अत्यंत मासूमियत से अंकित की है। उनके रंग भी बेहद सुखद है। मुख्य रूप से नारंगी तथा हरे रंगों के साथ–साथ सीमित रूप में कुछ गहरे रंगों आदि का भी प्रयोग किया है। उनके द्वारा अंकित अनावृत्ताओं नवयौवनाओं के चित्रों ने कला जगत में एक हलचल मचा दी थी।''[6] भारतीय कला में नये दृष्टिकोण में कला इतिहासकारों ने महिला कलाकारों की कला दुनियाँ में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया है। मृणाल कुलकर्णी कहती है कि ''गोगाी सरोजपाल भी इसी दशक की उभरी कलाकार थी। ये अधिकाशतः औरतों पर काम करती हैं तथा हिन्दू संस्कार के परिवारों पर टिप्पणी की है। वे अपने भारतीय समाज के भावनाओं को भारतीय महिलाओं के जीवन से जोड़ती है।''[7]

मुख्यतः गोगी सरोजपाल औरतों व उनसे जुड़ी समस्याओं को चित्रित करने वाली कलाकार है। उनके विशय हमेशा महिला प्रधान रहते है, जो असमान रूप से संयोजित करते हुए करूणा के भावों को उजागर करती है। गोगी सरोजपाल के विषय औरतों की दुनियाँ में घुमती–फिरती है, जैसे नारी, पुरूष वृक्ष, पशु–पक्षी और उनके भावनाओं के आधार पर आकारों का रचना होता है।

भारतीय समकालीन कला में विनोद भारद्वाज का कहना है कि ''गोगी सरोजपाल को कला की दुनियाँ में पकड़ बनाने के लिए हमेशा सघर्ष करना पड़ा है। गोगी की पारिवारिक जीवन शैली भी काफी अलग तरह का रहा है। जिसका प्रभाव गोगी सरोजपाल व उनकी कला पर पड़ा है।

इस विद्रोह से दिखने वाले व्यक्तित्व के पीछे शायद गोगी की पारिवारिक पृष्ठभूमि का भी हाथ है। लेखक और क्रान्तिकारी यशपाल की भतीजी गोगी को शुरू से ही आम भारतीय परिवारों से अलग तरह का वातावरण देखने को मिला है। यह प्रभाव उनकी कला पर देखने को मिलता है।''[8] सरोजपाल गोगी के चित्रों के आदमी, औरत, बच्चे और पशु–पक्षी अपनी उपस्थिति का एहसास कराते है। कष्ट, पीडा, मानवीय कमजोरी और आदमी के लड़ने की ताकत को गहरे मानवीय सन्दर्भों में अंकित करने वाली इनकी कला बहुत–बड़े दावे नहीं करती। लेकिन गोगी इस बात से अच्छी तरह परिचित है कि उनके चित्रों को औरतों पर हो रहे शोषण तथा अत्याचार अपने आप एक नया रूप लेने लगती है।

विनोद भारद्वाज का कहना है कि ''गोगी का बचपन फैक्ट्री में काम करने मजदूरों के पास व्यतीत हुआ है। बचपन के इन गहरे अनुभवों के बाद यह लखनऊ की एक दुनिया में आयी तथा अपना काम शुरू किया इसके बाद वह दिल्ली के इलाकों में जामा मस्जिद के पास रहना शुरू किया वहाँ गोगी को एक अलग दुनिया से परिचय हुआ जहाँ औरत चिड़िया की तरह चुप–चाप बैठी रहती थी। यह उनके लिए एक दम नया रहा जो उनके दिलो–दिमाग में बैठ गया।

भारतीय महिला कलाकार देवयानी कृष्ण के विचार सम्भवतः नसरीन मोहम्मदी से मिलते–जुलते है। अपनी पुस्तक 'समकालीन भारतीय कला' में ममता चतुर्वेदी ने बताया है कि देवयानी कृष्ण ने आकारों व विम्बों में कल्पना के साथ संवदे ना को भी उतारा है। जिनमें अण्डर वाटर, ग्राफिक चित्र श्रृंखला ऐसा ही एक उदाहरण है। प्राकृतिक दृश्य, बहुदेवतावाद, तांत्रिक साधना, प्रेतोवासना, स्टिल लाइफ, खिलौने, मुखौटे आदि का सृजन अनूठा रहा है। जिसमें भवरद्वारा, तूलिकाघात, नित परिवर्तित रंगते, चटखरंग, तरलगति भावभिव्यंजना दृष्टव्य है।''[9]

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i02.052

भारतीय महिला कलाकार निलिमा शेख ने मुगल तथा पर्शियन लघु चित्रण परम्पराओं से प्रेरित रही है। उनके विषय–वस्तु प्रकृति में पनपते फूल–पत्ती व ज्यामितीय अंलकरण के सिद्धातों को अपनाया है। पुष्पो और पत्तों के समूह को विभिन्न पैटर्न में बिना किसी परिपेक्षीय अवधारणा के संयोजित किया है। मृणाल कुलकर्णी कहती है कि उनके चित्र परिवार के माहौल व हर रोज घटित होने वाली घटनाओं को ही दर्शाता है। जहाँ प्रकृति–चित्र भी मानवीय भावनाओं से व्याप्त है। हर एक अनुभव स्थल, लोग, मिथक, इतिहास एक लगन व सौम्यता के साथ एक लड़ी में पिरोए गए है।''[10]

महिला कलाकार अर्पिता सिंह के चित्र जमीनी वास्तविकता के रहे है। जो सामाजिक रूप से उत्पन्न संकट के भीतर अपने को जीवित रखने की इच्छा लिए हुए है। जीवन के अनेक पड़ावों से गुजरते हुए तथा अनेक प्रकार के विषयों से सम्बन्धित है और यह भी कहा जा सकता है कि सामाजिक परिवेशीय हिंसा का आभास होता है जो इनकी कलाकृतियों में स्पष्ट दिखाई देता है। चित्र में अन्तराल (स्पेस) की प्रतिबद्धता है। रंगीन आकार या आकृतियाँ चित्रों में चारो ओर प्रवाहित सी लगती है।

जो तरलता से अपने स्वरूप का आभास कराती है। उनके चित्रों में कल्पना और अमूर्तन दिखायी देता है। अमूर्तता के आधार पर विभिन्न कलाकृतियों के भावों को दर्षाया है। चित्रों में मनुष्यों और वस्तुओं का समूह दिखायी देता है। चित्रों में आकृतियाँ किन्हीं कहानियों और घटनाओं के आस–पास अंधेरे टटोलते हुए, संघर्ष करते हुए, सिमटकर बैठे हुए आदि का बोध कराती है। अर्पिता के अपने चित्रों में सम्मोहन की स्थिति का आभास होता है।

पूर्ववर्ती भारतीय कला में महिला कलाकारों ने जटिल कलात्मक सूत्रों को अपनाया तथा कला में सेवेदात्मक भावों को अधिक प्रश्रय दिया गया है। अपने रूप के प्रति सचेष्ठ होने के कारण महिला कलाकारों ने अपने विचारों में संतुलन बनाकर वर्तमान और भविश्य को एक साथ चित्रों में प्रस्तुत किया है। आधुनिक भारतीय चित्रकला के बारे में यह विचार किया जा सकता है कि अपने समसामयिक सामाजिक सरोकारों से अलग हटकर कला–दीर्घाओं तक सिमट गई है। कला में आधुनिक महिला चित्रकारों ने बीसवीं सदी के अंत में लोक भावनाओं को वैचारिक आधार मानकर चित्रों को साधारण दर्शकों तक पहुँचाने का प्रयास किया है। इक्सवीं सदी के आरम्भिक समय में यह एक प्रयास है।

संदर्भ

1. चतुर्वेदी ममता, 2016 पृ0सं0–**66**
2. शर्मा सुनीता, 2006, बी0एच0यू0 पृ0सं0–**45**
3. भारद्वाज विनोद, 2006 पृ0सं0–**300**
4. कुलकर्णी मृणाल, हंस, अर्द्धशती खण्ड–2, 1997 अक्टूबर पृ0सं0–**94**
5. सुनीता शर्मा, शोध प्रबन्ध, बी0एच0यू0, 2006 पृ0सं0–**41**
6. अग्रवाल गिर्राज किशोर, 2015 पृ0सं0–**193**
7. कुलकर्णी मृणाल, अर्द्धशती विशेषांक खण्ड–2 अक्टूबर 1997 पृ0सं0–**96**
8. भारद्वाज विनोद, स0भा0क0 एक अंतरंग अध्ययन पृ0सं0–**60**
9. चतुर्वेदी ममता, 2016 पृ0सं0–**99**
10. कुलकर्णी मृणाल, अर्द्धशती विशेषांक खण्ड–2, अक्टूबर 1997 पृ0सं0–**209**